जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 10 अंक 102
सितंबर, 2024
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़ निम्नानुसार सदस्यता राशि

व्यक्तिगत वार्षिक	₹ 350/-	आजीवन व्यक्तिगत	₹ 3000/-
संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक	₹ 500/-	संस्था	₹ 5000/-

सदस्यता राशि प्रेषित करने के लिए ककसाड़ बैंक खाता विवरण

• खातेदार का नाम- **ककसाड़** • बैंक- **सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, खान मार्केट, दिल्ली**
• खाता संख्या- **3483675563** • आई.एफ.एस.सी. कोड- **CBIN0280310**
• एम.आई.सी.आर. कोड-**110016018**

विज्ञापन हेतु दरें

रंगीन		श्वेत/श्याम
फुल पेज (इनर)	₹ 15,000	₹ 10,000
बैक पेज कवर	₹ 25,000	—
बैक इनसाइड कवर	₹ 10,000	—
फ्रन्ट इनसाइड कवर	₹ 20,000	—
डबल स्प्रीड (इनर)	₹ 30,000	₹ 20,000

सहयोग राशि प्रेषित करने के बाद निम्नलिखित नंबर पर एस.एम.एस./फोन अथवा ई-मेल द्वारा तत्काल भेजें– 09968288050/09425258105/011-22728461, kaksaadeditor@gmail.com

कार्यालय---सी-54 रिट्रीट अर्पाटमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

ककसाड़ पत्रिका और लिटिल बर्ड प्रकाशन की पुस्तके यहाँ भी उपलब्ध है:

1. मौर्या बुक स्टाल
बी.एच.यू गेट लंका, वाराणसी-221005 उ.प्र.

2. राजू मैगजीन सेन्टर
दुकान न.1, ओम साई गेस्ट हाउस (SBI ATM के पास) लंका, वाराणसी -221005 उ.प्र.

3. दीवान न्यूज एजेंसी
सदर बाजार, झाँसी-284001 उ.प्र.

4. पंजाब बुक सेंटर
एस.सी.ओ. 1126-27, सेक्टर-22 बी, चंडीगढ़-160022 हरियाणा

5. लालमुनि बुक स्टाल
आर.एम.शाह चौक, पूर्णिया-854301 (बिहार)

6. सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी
110, ई- बंगला साहिब रोड, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

7. स्टूडेंड कॉर्नर
गोलघर सिनेमा रोड, गोरखपुर-273003 उ.प्र.

8. यूनिवर्सल बुक हाउस
शॉप न.17, विक्रम बिल्डिंग, लंका, वाराणसी-221005 उ.प्र

9. गीता पुस्तकालय
दुकान न.17, श्री विश्वनाथ मंदिर, बी.एच.यू, वाराणसी-221005 उ.प्र.

10. सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी
डिपार्टमेंट एल.सी, 4-ई/15, अशोक सेंटर झंडेवालान एक्स, नई दिल्ली-110055

11. इंडियन बुक डिपो
आदित्य भवन, प्रथम तल, बी.एन.वर्मा रोड अमीनाबाद पो.ऑ. के सामने, लखनऊ-226018 उ.प्र.

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

सितंबर 2024 **वर्ष-10 • अंक-102**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद (लिटिल बर्ड)

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

6. कभी-कभी अपने नवजात बच्चे को गोद में सुलाते हुए पेंटिंग बनाती हूँ (युवा गोंड कलाकार **गरिमा टेकाम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

लेख

8. सिक्किम का लोकजीवन : **वीरेन्द्र परमार**

12. भारत की सर्वप्रिय भाषा बने हिंदी : **गोपालकृष्ण गांधी**

14. कजरी : उद्भव और स्वरूप : **अश्विनीकुमार आलोक**

17. बेड़िनी और उनकी लोकनृत्य कला "राई" : **शिवम शर्मा**

20. भोजपुरी की भाषायी राह : **डॉ. धीरेंद्र प्रताप सिंह**

23. सिंधी भाषा का ऐतिहासिक सांस्कृतिक विकास : **रश्मि रमानी**

28. विवाह में बेटी विदाई और लोकगीत : **संध्या सिलावट**

कहानी

31. छेड़छाड़ : **हरजेन्द्र चौधरी**

35. मौली : **प्रियंका पाठक**

कविता/ग़ज़ल

38. उमेश पंकज 38. जितेन्द्र जलज 39. पल्लवी मुखर्जी 41. तेज नारायण 41. विमल किशोर 42. राजलक्ष्मी जायसवाल 42. डॉ. जियाउर रहमान जाफ़री 43. अविनाश भारती

व्यंग्य

44. प्रीतिभोज : **अर्चना त्यागी**

लघुकथा

37. पृथ्वीराज-संयोगिता

पुस्तक समीक्षा

45. आदिवासी कविता : चिंतन और सृजन : **तेजस पूनियां**

48. ठलुआ चिंतन : **डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ**

11. **क्या है ककसाड़?**

43. **यादें**

49. **साहित्यिक समाचार**

आवरण कलाकृति - गरिमा टेकाम
(गोंड कलाकार) - भोपाल (म.प्र.)
मो. 79996-62067
हर चित्र में गाय की उपस्थिति इनकी विशेषता है।

संपादकीय

बधाई हो! सितंबर माह की पत्रिका आपके हाथों में है और इसके अनछुए काग़ज़ के नयेपन को आप महसूस कर पा रहे होंगे। बीते माह हम सब ने हरियाली, अमूस तिहार, तीज, नाग पंचमी, रक्षाबंधन आदि कई तिथि त्योहार, लोकपर्व के साथ ही देश का सबसे बड़ा राष्ट्रीय महापर्व 78वां स्वतंत्रता दिवस भी मनाया। इस स्वतंत्रता-दिवस पर प्रधानमंत्री द्वारा लाल किले से दिए गए भाषण में, जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा से जुड़े कुछ तथ्यों की जो प्रस्तुति की गई, वह न केवल ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण थी, बल्कि यह हमारी जनजातीय धरोहर की गहरी अनदेखी को भी उजागर करती है। प्रधानमंत्री ने कहा कि बिरसा मुंडा ने 1857 की क्रांति से 20-25 साल पहले स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था, जबकि यह दावा पूरी तरह से असत्य है। तथ्य यह है कि बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को हुआ था।

यह भूल न केवल इतिहास की गंभीर गलत व्याख्या है, बल्कि यह भी सवाल उठाती है कि प्रधानमंत्री के भाषण कौन तैयार करता है और वे कौन लोग हैं जो तथ्यों की जाँच करने की जिम्मेदारी निभाते हैं? लाल किले की प्राचीर से इतने गंभीर ऐतिहासिक भ्रम को प्रस्तुत करना एक साधारण भूल नहीं है। जब देश का सर्वोच्च नेता लाल किले से बोलता है, तब उसके हर शब्द का प्रभाव इतिहास के भविष्य पर पड़ता है। नेपोलियन बोनापार्ट ने सही कहा था, "History is a set of lies agreed upon. "इतिहास झूठों का वह समूह है, जिस पर सहमति बन जाती है।" यह कथन हमें याद दिलाता है कि इतिहास की गलत व्याख्या एक पूरे समाज को भटका सकती है।

बिरसा मुंडा को उनका अनुयायी जनजातीय समुदाय भगवान मानता है, उनके जल, जंगल और जमीन के संघर्ष ने उन्हें आदिवासी जननायक से ऊपर उठाकर सार्वकालिक जननायक का दर्जा दिया है। लेकिन जब प्रधानमंत्री जैसे उच्च पद पर बैठे व्यक्ति उनके जीवन और योगदान पर गलत तथ्य प्रस्तुत करते हैं, तो यह हमारे पूरे समाज के लिए एक बड़े सवाल का रूप ले लेता है कि : क्या हम अपने इतिहास और धरोहर को सही से समझ और सम्मान कर पा रहे हैं?

यह घटना और महत्वपूर्ण इसलिए हो जाती है, क्योंकि यह पहली बार नहीं है जब प्रधानमंत्री के भाषण में इतिहास की ऐसी गंभीर गलतियाँ सामने आई हैं। इससे पहले भी 'नालंदा' और 'तक्षशिला' विश्वविद्यालयों के संदर्भ में ऐतिहासिक तथ्यों को गलत रूप में प्रस्तुत किया गया था। प्रधानमंत्री ने तक्षशिला को भारत का हिस्सा बताया था, जबकि यह वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है। यह केवल एक भूगोल की त्रुटि नहीं थी, बल्कि इतिहास और धरोहर के प्रति सतही समझ का संकेत भी देती है। इन त्रुटियों के लगातार दोहराए जाने से यह स्पष्ट होता है कि या तो किसी न किसी स्तर पर ऐसी गंभीर गैरजिम्मेदाराना चूक हो रही है या फिर जानबूझकर हमारी ऐतिहासिक धरोहरों को अनदेखा किया जा रहा है। जब इतिहास गवाह है कि इतिहास के महत्वपूर्ण प्रसंगों को इस प्रकार तोड़ा-मरोड़ा जाता है, तो यह समाज के लिए घातक साबित हो सकता है।

इस संदर्भ में मुझे जॉर्ज सैंटायना का कथन याद आता है, "Those who cannot remember the past are